ADB@50
प्रतिरोध@50
एडीबी के 50वें वर्ष पर भारत मे 50 स्थानों पर प्रतिरोध
मई 1–7, 2017

एशियन डेवलपमेंट बैंक के 50 वर्ष पूरे होने पर भारत में 50 जगहों पर प्रतिरोध कार्यक्रम
अन्यायसंगत विकास के 50 वर्षः एडीबी के बिना ही बेहतर

साथियों जिन्दाबाद!

एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) 4–7 मई को योकोहामा, जापान मे आपनी वार्षिक बैठक में ".एशिया को एक साथ मिल कर समृद्ध बनाये" (Building Together the Perspective of India) विषय/थीम के साथ इसके 50वें वर्ष का उत्सव मनाने जा रहा है। एडीबी के विभिन्न क्षेत्रों में किये गए कार्यों तथा एशिया और प्रशांत क्षेत्रों में अवसरों को बढ़ाने और समृद्ध बनाने, ऐतिहासिक वैश्विक विकास में उल्लेखनीय योगदान का दावा करता है। यहा हमे उनके विकास की परिकल्पना तथा उनके निवेशों द्वारा हुई भारी क्षति को भी उजागर करना जरुरी है।

1966 से एडीबी अस्तित्व में आने के बाद एशिया–प्रशात क्षेत्र में विश्व बैंक समूह तथा जापानी सरकार के बाद, तीसरा सबसे बड़े वित्तीय विकास के श्रोत के रूप में उभरा है। 2017 में प्रकाशित हुए दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि एडीबी ने पहले दशक में 3 बिलियन डालर का ऋण देने की शुरूआत की जो पिछले दशक बढकर 123 बिलियन डालर ऋण कर दिया है। एडीबी ने यह भी दावा किया है कि वह 2020 के मध्य तक पूरी तरह से गरीबी दूर करने के लिऐ, संयुक्त आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संवहनीय विकास के उद्देश्य को बढ़ावा देने हेतु ढाचॉगत, शोध, और ज्ञान/जानकारी के लिए 250 बिलियन डालर तक संघटित कर लिये है।

एडीबी मुख्य तीन मुख्य उपलब्धियों का प्रचार कर रहा हैः कि एशिया–प्रशांत देशों की कुल जीडीपी, विश्व की जीडीपी का केवल एक तिहाई है, 2016 मे 8.3 बिलियन डालर के निजी क्षेत्र मे ऋण का रिकार्ड रहेगा और एशिया मे हाल ही में पैदा हुऐ नवजात, 1960 मे पैदा हुये व्यक्ति की तुलना मे 25 साल अधिक जियेगा। ऐसा करने मे यह पता चला है कि यह क्षेत्र का कार्बन उर्त्सजन विश्व के उर्त्सजन का आधा तक पहुॅच चुका है।

इसके बाद एडीबी की 2015 और 2020 की रणनीति के लिए मध्यावधि समीक्षा में ज्ञात हुआ कि एशिया और प्रशांत आय तथा आर्थिक–सामाजिक अवसरों तक पहुॅच मे असमानता बढाया ही है। ढांचेगत बढ़ते निवेश ने जनसँख्या के कमजोर तबके जिसमे कामगार और महिलाएं हैं, को समान वृद्धि और सामजिक सुरक्षा देने में असफल किया है।

जैसा कि लोग विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे हैं जहाँ एडीबी ने निवेश किया है। हम प्रत्येक क्षेत्र में हो रही तबाही/नुकसान से अवगत हैं– तटीय क्षेत्रों में विस्थापन और आजीविका को नष्ट, मछुवारा तथा कृषक समुदाय, खनन प्रभावित लोगों पर पर्यावरणीय जुल्म, कोयले आधारित परियोजनाये के आस– पास के समुदाय और बड़ी जल विद्युत् परियोजनाऐं, शहरों से गरीबो का बहार निकालना, शहरी विकास के नाम पर उनके वैध आवासों निकालना तथा आजीविका संसाधनों से किये गये रेलीपटरी/हाथठेला वाले और अपने मुख्य मजदूर स्टैण्डर्ड (CLS) को अपने कॉन्ट्रैक्ट प्रोजेक्ट में लागू करने में असफल होने पर मजदुरो को और पिछडा और अधारहीन बना देता है। लाभकर्ता केवल प्रोजेक्ट कॉन्ट्रैक्टर्स होते हैं– राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय कंपनियां और मजदूरी पर लिये गये कन्सलटेंट/सलाहकार इत्यादि।

हमे विश्वास है कि एडीबी का नवउदार पूजीवाद का विकास निती और वृद्धि मॉडल असफल हो गया है। आगे, जैसे कि एडीबी आपने 50वें वर्ष का उत्सव मनाने जा रहा है उसी इस अवसर पर चलो आओ हम प्रतिरोध मे एडीबी के 50 वर्ष की यात्रा को आलोचनात्मक रूप से देखे और उसके कार्यक्रमो, नितियो और निवेश का मल्याकंन करे। नए उदारवादी आर्थिक विकास मॉडल की विफलता और एशिया प्रात के लोगों और समुदायों के प्रतिरोध उत्सव और उनकी चुनौतियो मे शामिल होकर एक साथ एक आवाज मे प्रतिरोध व्यक्त करे और उस असफल निती और प्रतिमान को रोक दे।

हाल ही में दो नए बहुपक्षीय बैंक, एशियाई इंफ्रास्ट्रक्चर इनवेशमेंन्ट बैंक (एआईआईबी) और न्यू डेवलपमेन्ट बैंक (ब्रिक्स बैंक/एनडीबी) का उद्भव हुआ है। जो एडीबी और विश्व बैंक समूह के साथ विनाशकारी परियोजनाओं हेतु मिलकर निवेश करने के लिये उनका महत्वपूर्ण हिस्सा बनते जा रहे है। और यह एक विनाशकारी प्रयोग है। ढांचागत परियोजनाओ के क्षेत्र में बडे निवेश ही विस्थापन और पर्यावरणीय विनाश का कारण रहे है। इनके कमजोर पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र, प्रतिबद्धताऐं और अपारदर्शी सुरक्षा उपाय से ही जनता को कुछ हासिल नही हुआ।

हैदराबाद में 39वीं वार्षिक बैठक के दौरान 2006 में 100 से अधिक जन आंदोलन, ट्रेड यूनियन और गैर सरकारी संगठन एक साथ आये उसी दौरान हैदराबाद में एक काउंटर शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। यह फोम भारत और अन्य एशियाई देशो के विभिन्न समूह से मिलकर बना है जो पीपल्स फोरम अगेंस्ट एडीबी के सदस्य है।

पुराने और नए आईएफआई एक्टर/संघर्षों को पुनः सहजने और उन तक पहुंचने के उद्देश्य के साथः, एआईआईबी और एनडीबी के उद्भव तथा नए खिलाड़ियों एवं एडीबी, विश्व बैंक समूह के बीच सह निवेश करने के संदर्भ में, इस अवसर को भुनाते हुये इन बडे खिलाडियों के बीच के सम्बधों, कई मौलिक अधिकारों पर बढ़ते हुए हमले और दमन के माहौल में मतभेदों को उजागर करे। इस अवसर का उपयोग करते हुये असहमति और विरोध करने के हमारे को अधिकार दिखाये। हम मे से कुछ साथी जो पिछले सप्ताह दिल्ली मे मिले और जिन्होने फोनपर, मेलकर, इस बैठक मे योगदान दिया, उन सभी ने सोचा कि यह एडीबी के 50वे वर्ष का उत्सव एक उपयुक्त समय है जहॉपर ऐसे सस्थनों के विनाशकारी विकास मॉडल और समुदायों और पर्यावरण पर पडे प्रभावों को उजागर करना चाहिये।

प्रस्ताव यह है कि एडीबी के 50वें वर्ष में भारत में 50 जगहों पर 50 प्रतिरोध कार्यक्रमो आयोजन करना चाहिये है। जैसे की एडीबी का आधिकारीक उत्सव कार्यक्रम जापान मे मई 4–7, 2017 से है इसलिये हमने साचा कि हम 1–7 मई तक पूरे सप्ताह प्रतिरोध करेगे और ये 50 प्रतिरोध/कार्यक्रम सप्ताह के किसी दिन रखा जा सकता है।

प्रतिरोध किसी भी प्रकार से जताया जा सकता है वो हर जगह अलग हो सकता है। रोड पर विरोध कर, सेमीनार/बैठक, प्रेस सम्मेलन, सांस्कृति विरोध, एडीबी निवेश परियोजनाओ के प्रभाव की फोटो प्रदर्शनी ऐसे कई माध्यम है जिनका आप उपयोग कर सकते।

स्थानीय संगठन इस कार्यक्रम मे मुख्य भूमिका लेगे और प्रतिरोध की कार्ययोजना बनायेगे जो स्थानीय आन्दोलन के लिये वे उपयुक्त समझते हो। हमने यह भी सोचा था कि ये कार्यक्रम एक साथ पीपल्स फोरम अगेंस्ट एडीबी के द्वारा आयोजित करे ताकि हैदराबाद प्रक्रिया की निरंतरता सुनिश्चित की जा सके। हमारे इस प्रतिरोध कार्यक्रम को उन तक पहुॅचाने हेतु एक अच्छी सोशल मिडीयॉ की उपस्थिति की भी जरूरत है।
हममे से कुछ साथी एडीबी द्धारा निवेश की गई परियोजनाओं की जानकारी राज्यवार और क्षेत्रावार एकत्र करने का प्रयास कर रहे है ताकि वह जानकारी स्थानीय समूहो और व्यक्तियों तक पहुचाई जा सके। स्थानीय साथी इस जानकारी का आपने प्रतिरोध मे उपयोग कर सके। हम आपको पोस्टर और कुछ प्रचार सामाग्री आप तक पहुचाने का भी प्रयास कर रहे है। हमे उम्मीद है यह प्रतिरोध और कार्यक्रम के लिए ये उपयुक्त होगी।

हमारी बातचीत के दौरान कुछ साथियो ने इस कार्यक्रम हेतु सहमति दी है जिसमे बेगलोर, दिल्ली, तिरूअन्नतपुरम, कोरबा (छत्तीसगढ), बिलासपुर, जबलपूर, बडवानी, भोपाल, जबलपूर एवं सिगरौली (मध्यप्रदेश) मुद्रा (गुजरात) और मुम्बई भूवनेश्वर (उडिसा) शामिल है।

आप सभी से अपील है कि इन अंर्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के गैरजिम्मेदाराना और असमान निवेश के खिलाफ देशव्यापी प्रतिरोध अभियान मे स्थानीय स्तर पर विरोध जाताये। आपसे अनुरोध करते है कि आप अपनी स्थानीय भाषा (और उसका अर्थ हिन्दी/इग्लिश) में एडीबी और अन्य अंर्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानो पर सदेश देने हेतु एक नारा जरूर हमे भेजें ताकि हम इसे वेबसाइट/फेसबुक के माध्यम से उन तक पहुचाये।

इस कार्यक्रम मे आपके सुझाव और योगदान बहुत जरूरी है।
जिन्दाबाद!
एडीबी के विरूध जन फोरम

Email-wgonifis@gmail.com फोन नम्बर 011–49123696
Web: http://wgonifis.net **Twitter: @wgonifis**
Facebook :facebook.com/wgonifis. **#BetterOffWithoutADB**